Postal Reg. No.GDP -45/2017-2019

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष 2

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

The Weekly BADAR Qadian HINDI

अंक 16

मूल्य 300 रुपए वार्षिक

संपादक शेख़ मुजाहिद अहमद

20 अप्रैल 2017 ई

22 रजब 1438 हिजरी कमरी

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्रेहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दोलिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण अपना फ़जल नाज़िल करे। आमीन

**तुम में श्रेष्ठतम वही है जो अपने भाई के दोषों और भूलों को अधिक से अधिक क्षमा करता है, और दुर्भाग्यशाली है वह जो हठधर्मी से काम लेते हुए उसे क्षमा नहीं करता।**

**तुम्हारे लिए एक अनिवार्य शिक्षा यह है कि क़ुर्आन शरीफ़ को अलग-थलग न डाल दो कि उसी में तुम्हारा जीवन निहित है। समस्त मानव जाति के लिए सम्पूर्ण धरती पर अब क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई पुस्तक नहीं और न ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा कोई रसूल और सिफ़ारिश करने वाला। अतः तुम प्रयास करो कि सच्चा प्रेम इस प्रभुत्वशाली नबी के साथ हो।**

# उपदेश हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"ख़ुदा की इच्छा है कि तुम्हारे जीवन का पूर्ण काया-कल्प हो। वह तुमसे एक मौत मांगता है जिसके पश्चात वह तुम्हें जीवन प्रदान करेगा। तुम परस्पर शीघ्र सुलह करो, अपने भाईयों के दोषों को क्षमा करो क्योंकि उद्दण्ड है वह मनुष्य जो अपने भाई से समझौता करने के लिए तैयार नहीं। वह काटा जाएगा क्योंकि वह एकता को खण्डित करता है। तुम हर पहलू से अहं को त्याग दो, आपसी द्वेष मिटा दो, सच्चे होकर झूठे की भांति दीनता का अनुसरण करो ताकि तुम्हें क्षमा किया जा सके। अहंकार में मत बढ़ो कि जिस द्वार पर तुम्हें बुलाया गया है उसमें एक अहंकारी मनुष्य प्रवेश नहीं कर सकता दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो इन बातों को नहीं समझता जो ख़ुदा के मुख से निकली और मैंने उनका वर्णन किया। यदि तुम चाहते हो कि आकाश पर ख़ुदा तुम से प्रसन्न हो तो तुम परस्पर इस प्रकार एक हो जाओ जैसे एक पेट में दो भाई। तुम में श्रेष्ठतम वही है जो अपने भाई के दोषों और भूलों को अधिक से अधिक क्षमा करता है, और दुर्भाग्यशाली है वह जो हठधर्मी से काम लेते हुए उसे क्षमा नहीं करता। ऐसे व्यक्ति का मुझ से कोई नाता नहीं । ख़ुदा की फटकार से डरो कि वह पवित्र और स्वाभिमानी है। कुकर्मी ख़ुदा के निकट नहीं हो सकता, अभिमानी उसके निकट नहीं हो सकता, अत्याचारी उसके निकट नहीं हो सकता,धरोहर को हड़प जाने वाला उसके निकट नहीं हो सकता और प्रत्येक जो उसके नाम के लिए मर मिटने वाला नहीं उसके निकट नहीं हो सकता, वे जो भौतिक साधनों पर कुत्तों, चीलों और गिद्दों की भांति टूट पड़ते हैं वे सांसारिक भोग-विलास में लीन हैं वे ख़ुदा के निकट नहीं हो सकते। प्रत्येक अपवित्र दृष्टि उस से परे है, प्रत्येक अपवित्र दिल उस से बे ख़बर है। वह जो उसके लिए आग में है उसे आग से मुक्ति दी जाएगी, वह जो उसके लिए रोता है वह हंसेगा, वह जो उसके लिए संसार से विरक्त होता है वह उसे प्राप्त होगा। तुम सच्चे दिल, पूर्ण सच्चाई और लगन से ख़ुदा के मित्र बन जाओ ताकि वह भी तुम्हारा मित्र बन जाए । तुम अपने अधीन काम करने वालों, अपनी पत्नियों और अपने दीन भाइयों पर दया करो ताकि आकाश पर तुम पर भी दया हो। तुम वास्तव में उसके हो जाओ ताकि वह भी तुम्हारा हो जाए। संसार सहस्त्रों विपत्तियों का स्थान है जिनमें से एक प्लेग भी है। अतः तुम ख़ुदा से सच्चा सम्बन्ध स्थापित करो ताकि वह यह विपत्तियाँ तुम से दूर रखे । कोई विपत्ति या संकट धरती पर नहीं आता जब तक आकाश से आदेश न हो । कोई संकट दूर नहीं होता जब तक आकाश से कृपा न हो। अतः आपकी बुद्धिमत्ता इसी में है कि तुम जड़ को पकड़ो न कि शाखा को। तुम्हें औषधि और उपाय से रोका नहीं है, हां उन पर निर्भर रहने से रोका है। अन्ततः वही होगा जो उसकी इच्छा के अनुकूल होगा। यदि कोई शक्ति रखे तो ख़ुदा पर निर्भर रहने का स्थान सर्वश्रेष्ठ है। तुम्हारे लिए एक अनिवार्य शिक्षा यह है कि क़ुर्आन शरीफ़ को अलग-थलग न डाल दो कि उसी में तुम्हारा जीवन निहित है। जो लोग क़ुर्आन को सम्मान देंगे वे आकाश पर सम्मानित किए जाएँगे। जो लोग हर हदीस और हर वाणी पर क़ुर्आन को प्राथमिकता देंगे उनको आकाश पर प्राथमिकता प्रदान की जाएगी। समस्त मानव जाति के लिए सम्पूर्ण धरती पर अब क़ुर्आन के अतिरिक्त कोई पुस्तक नहीं और न ही हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सिवा कोई रसूल और सिफ़ारिश करने वाला। अतः तुम प्रयास करो कि सच्चा प्रेम इस प्रभुत्वशाली नबी के साथ हो। उस पर किसी अन्य को किसी भी प्रकार की श्रेष्ठता न दो, ताकि आकाश पर तुम्हारा नाम मुक्ति प्राप्त लोगों में लिखा जाए। स्मरण रहे कि मुक्ति कोई ऐसी वस्तु नहीं जो मरणोपरान्त प्रकट होगी अपितु वास्तविक मुक्ति वह है जो इसी सँसार में अपना प्रकाश दिखलाती है। मुक्ति प्राप्त मनुष्य कौन है ? वह जो विश्वास रखता है कि ख़ुदा एक वास्तविक सत्य है और हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम उसके और उसकी प्रजा के मध्य सिफ़ारिश करने वाले हैं। आकाश के नीचे उनके समान न कोई अन्य रसूल है और न क़ुर्आन के समान कोई अन्य पुस्तक है। ख़ुदा ने किसी के लिए न चाहा कि वह सदा जीवित रहे परन्तु यह ख़ुदा की ओर से आया हुआ नबी सदा के लिए जीवित है, और ख़ुदा ने उसके सदा जीवित रहने की नीव इस प्रकार रखी है कि उसकी शरीअत और आध्यात्मिक उपलब्धियों को प्रलय तक जारी रखा और अन्ततः उसकी आध्यात्मिक उपलब्धियों से इस मसीह मौऊद को संसार में भेजा, जिसका आना इस्लामी इमारत को पूर्ण करने के लिए आवश्यक था।

(कश्ती नूह, रूहानी खज़ायन,भाग 12, पृष्ठ 12 -113)

☆ ☆ ☆

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद साहिब कादियानी मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की जीवनी तथा संक्षिप्त इतिहास एवं धार्मिक सेवाऐं (भाग-4)

अनुवादक : शेख़ मुजाहिद अहमद शास्त्री, कादियान

## कसूफ़ तथा ख़सूफ़ का निशान

इमाम बाक़र की रिवायत के अनुसार दारक़ुत्नी की हदीस में यह भविष्यवाणी लिखी है कि हमारे महदी के ज़माने की एक निशानी यह होगी कि रमज़ान के महीने में चाँद को उसके ग्रहण लगने की तिथियों में से पहली तिथि को ग्रहण लगेगा तथा इसी महीने के अन्त में सूर्य को उसके ग्रहण की तिथियों में से बीच की तिथि को ग्रहण लगेगा।

यह निशान 1894 ई. में पूरा हुआ जबकि हुज़ूर के महदी होने के दावे के पश्चात हदीस की शरारतों के अनुसार पहले चाँद को ग्रहण लगने की तिथियों में से पहली तिथि अर्थात 13 को तथा सूर्य पर ग्रहण पड़ने के दिनों में से बीच की तिथि को अर्थात 28 को ग्रहण लगा। इस निशान को कसूफ़ तथा ख़सूफ़ का निशान कहते हैं। इस निशान के प्रकट होने का क़ुर्आन शरीफ़ की सूर: क़यामत में भी वर्णन है तथा इंजील में भी यह वर्णन पाया जाता है कि मसीह के दोबारा आगमन के समय चाँद तथा सूर्य अंधेरे हो जाएँगे।

अत: यह एक महान निशान था जो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की सच्चाई प्रकट करने के लिए अल्लाह की ओर से दिखाया गया।

## अरबी सब भाषाओं की माँ (जननी) है

1895 ई. में आपने ख़ुदा तआला से संदेश पा कर यह ऐलान किया कि संसार के वर्तमान काल की सारी भाषाएँ, अरबी भाषा से निकली हैं। इसलिए अरबी सब भाषाओं की जननी है। आपने अपने इस दाअवे को ऐसे ठोस सबूतों के साथ प्रस्तुत किया कि आज तक कोई उन को रद्द नहीं कर सका। बल्कि इस दाअवे के पक्ष में कई नए-नए सबूत भी प्रकट होते रहते हैं।

## हज़रत बाबा नानक साहिब

1895 ई. में आप ने अपनी इस खोज का ऐलान फ़र्माया कि सिख धर्म के संस्थापक हज़रत बाबा नानक साहिब यद्यपि हिन्दुओं के घर में पैदा हुए थे परन्तु आप पूरी तरह तौहीद (एक ख़ुदा को मानने) पर विश्वास रखते थे। तथा एक परमात्मा की भक्ति की शिक्षा भी देते थे। आप एक बुज़ुर्ग तथा ख़ुदा के प्यारे बन्दे थे।

## जलसा मज़ाहब (सर्व धर्म सम्मेलन)

1896 ई. के अन्त में लाहौर में एक बहुत बड़ा जलसा हुआ जिसमें सारे धर्मों के प्रतिनिधियों को आमंत्रित किया गया कि वह इसमें सम्मिलित हो कर अपने अपने धर्म की शिक्षा तथा गुण बयान करें ताकि लोगों को एक ही समय में विभिन्न धर्मों की शिक्षा को जानने तथा जाँचने का अवसर मिल सके। इस जलसे में बहुत से धर्मों के चोटी के प्रतिनिधियों तथा लीड़रों ने भाषण दिए तथा अपने अपने धर्म की विशेषताएँ बयान कीं। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने इस्लाम के प्रतिनिधि के तौर पर इस्लाम की विशेषताओं तथा गुणों पर एक बहुमूल्य तथा ज़बरदस्त लेख इस जलसे में पढ़ने के लिए लिखा। अल्लाह तआला ने आपको इल्हाम द्वारा बता दिया कि आपका लेख इस जलसा में पढ़े जाने वाले सारे लेखों तथा भाषणों से सर्वोच्च रहेगा अर्थात उच्चतम रहेगा और लोग इसे विशेषत: बहुत पसंद करेंगे। आपने जलसा होने से पहले ही यह विज्ञापन प्रकाशित कर दिया कि अल्लाह तआला की दी हुई सूचना के अनुसार मेरा लेख सब पर बाला रहेगा। अत: ऐसा ही हुआ। जब जलसे में आपका लेख पढ़ा गया तो जलसा में आए सारे लोगों ने यह स्वीकार किया कि वास्तव में यह लेख बाक़ी सब लेखों से बाला रहा है। फिर जब अख़बारों में इस जलसे की ख़बर छपी तो इसमें भी यह स्वीकार किया गया था कि (हज़रत) मिर्ज़ा साहिब का लेख सब से अच्छा तथा सब से उत्तम था । हुज़ूर का यह लेख ''इस्लामी उसूल की फ़िलॉसफ़ी" के नाम से प्रकाशित हो चुका है ।

## मुक़द्दमा ड़ाक्टर मार्टन क्लार्क

जब कुछ पादरियों ने देखा कि आप दिन प्रतिदिन कामयाब हो रहे हैं और आप की दलीलों का ईसाइयत मुक़ाबला नहीं कर सकती तो वह ओछे तथा नीच हथियारों पर उतर आए। अत: उन्होंने 1897 ई. में एक षड़यन्त्र करके हुज़ूर पर क़त्ल का मुक़द्दमा कर दिया। यह मुक़द्दमा एक मशहूर पादरी ड़ा. हनरी मार्टन क्लार्क की ओर से अंग्रेज़ डिप्टी कमिश्नर कैप्टन ड़गलस की अदालत में दायर किया गया। और आरोप यह लगाया गया कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक व्यक्ति अब्दुल हमीद नामक द्वारा पादरी हनरी क्लार्क को क़त्ल कराने की कोशिश की है (नऊज़ बिल्लाह) परन्तु अल्लाह तआला ने चमत्कारी ढ़ंग से इस मुक़द्दमे में भी आपकी सहायता फ़र्माई। तथा न केवल यह कि अदालत ने विरोधियों के पूरे यत्न के बावजूद आपको गिऱफ्तार ही न किया बल्कि तहक़ीक़ात के पश्चात आपको बाइज्ज़त इस मुक़द्दमे से बरी कर दिया। इस मुक़द्दमे में हुज़ूर के विरोधी मुसलमानों तथा हिन्दुओं ने भी ईसाई पादरियों की सहायता की तथा हुज़ूर को सज़ा दिलाने की पूरी कोशिश की। परन्तु उन्हें अल्लाह तआला ने नाकाम और नामुराद रखा।

## पंडित लेखराम के बारे में भविष्यवाणी

पंडित लेखराम हिन्दुओं के एक दल आर्य समाज से था। वह आपके मुक़ाबले पर आया तथा इस्लाम के मुक़ाबले में वेदों को सच्चा साबित करने के लिए बड़ा ज़ोर लगाया। बराहीने अहमदिया के चैलेंज का उत्तर शरारतों के अनुसार देने में विवश रहा। पर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरुद्ध बहुत ही हीन पुस्तकें, लेख तथा इश्तिहार प्रकाशित करता रहा। उसकी पुस्तक ''कुल्लियाते आर्य मुसाफ़िर" को देखो। आपसे बार-बार सच्चाई का निशान दिखाने को कहता रहा तथा आपको, अपने विरुद्ध किसी निशान का ऐलान करने की भी आज्ञा दी। अल्लाह तआला ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को अपने इल्हाम से बार-बार सूचना दी कि यह व्यक्ति हलाक किया जाएगा। अर्थात मारा जाएगा। (देखो पुस्तक ''आईना कमालाते इस्लाम" बरकातुद्दुआ तथा करामातुस्सादेक़ीन)। यह पंड़ित लेखराम की इस भविष्यवाणी के मुक़ाबले में था कि ''मिर्ज़ा तीन साल के अन्दर मर जाएगा।... और इसकी ज़ुरियत (संतान) में से कोई बाक़ी नहीं रहेगा ।" (तकज़ीब बराहीने अहमदिया तथा कुल्लियाते आर्य मुसाफ़िर)

अब सारी दुनिया जानती है कि कौन सच्चा और कौन झूठा साबित हुआ।

## हर हालत में सच बोलने का नमूना

पादरी मार्टन क्लार्क की ओर से क़त्ल का जो मुक़द्दमा हुज़ूर पर किया गया उसमें हुज़ूर ने हर हालत में सच बोलने का ऐसा नमूना प्रस्तुत किया जिसे अहमदी बच्चों को सदा अपने सामने रखना चाहिए।

हुआ यह कि हुज़ूर ने इस मुक़द्दमें में पैरवी करने के लिए एक ग़ैर अहमदी वक़ील मौलवी फ़ज़ल दीन साहिब को भी नियुक्त किया हुआ था। उन्होंने एक अवसर पर अदालत में प्रस्तुत करने के लिए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की ओर से एक क़ानूनी बयान तैयार किया जिसमें कुछ बातें घटना के विरुद्ध भी थीं। जब यह बयान हुज़ूर के सामने उन्होंने दिखाया तो हुज़ूर ने फ़र्माया :-

''इसमें तो झूठ शामिल है। मैं कभी ऐसा बयान देने के लिए तैयार नहीं हूँ, जिसमें झूठ का भी हिस्सा (भाग) हो।"

उस ग़ैर अहमदी वकील ने कहा कि यदि आप बयान न देंगे तो आप जान बूझ कर स्वयं को मुसीबत में ड़ाल लेंगे। आप पर क़त्ल का मुक़द्दमा है । इससे छुटकारा पाने के लिए ज़रूरी है कि आप ऐसा ब्यान दें। इस पर हुज़ूर ने फ़र्माया :-

''मैं कभी ऐसा बयान नहीं दूँगा जो घटना के विरुद्ध हो। भला मैं अपने आप को बचाने के लिए अपने ख़ुदा को क्यों नाराज़ करूँ। मैं ऐसे झूठे बयानों पर भरोसा नहीं रखता। मेरा भरोसा तो अपने ख़ुदा पर है । तथा मुझे विश्वास है कि मेरा ख़ुदा मुझे अवश्य बचाएगा।"

(अलहकम 14 नवम्बर 1934 ई.)

उस ग़ैर अहमदी वकील ने बाद में बयान किया कि मैं हुज़ूर की इस हिम्मत पर चकित रह गया कि क़त्ल का मुक़द्दमा है परन्तु फिर भी झूठ बोलने पर राज़ी न हुए। जबकि मुक़द्दमा करने वाले ईसाई थे तथा जिस जज की अदालत में यह मुक़द्दमा था वह भी ईसाई था। तथा हुज़ूर के विरोधी, जिनमें ईसाई हिन्दु तथा ग़ैर

शेष पृष्ठ 8 पर

# ख़ुत्बः जुमअः

मुस्लिम देशों में भी आतंकवाद बहुत अधिक है। चरमपंथ भी है और यहां हमले हो रहे हैं। चाहे इस बात के कि चरमपंथी समूहों और मुस्लिम देशों में विद्रोही गुटों को हथियार पश्चिमी देशों से ही मिलते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और इस्लाम के खिलाफ जो द्वेष है इस को व्यक्त करने के लिए कुछ शक्तियों ने बड़ी होशियारी से इन समूहों को संगिठत किया है। एक ओर सरकारों को स्पष्ट और गोपनीय सहायता दी जा रही है और दूसरी ओर विद्रोहियों और चरमपंथी गिरोहों की किसी न किसी तरीके से मदद की जाती है। अगर यह मदद न हो तो कोई गिरोह या सरकार इतना लंबा समय लड़ाई नहीं लड़ सकते।

---

दुर्भाग्य यह है कि मुसलमानों को जब भी नुकसान पहुंचा है मुसलमानों के अपने कर्म और षड्यंत्रों और बग़ावतों और एक दूसरे के अधिकार न अदा करने और निजी हितों को राष्ट्रीय और कौमी हितों पर प्राथमिकता देने से ही पहुंचा है। इस्लाम की शिक्षा को भूलने और अपने उद्देश्य को नजर अंदाज करने से ही पहुंचा है।

---

आजकल अल्जीरिया में यह अत्याचार बढ़ रहा है पुलिस अहमदियों को परेशान कर रही है अदालतें अपनी इच्छा के निर्णय करके अहमदियों को जेलों में डाल रही हैं और कुछ को एक साल से तीन साल तक की जेल की सज़ा मिली है सिर्फ इसलिए कि उन्होंने यह कहा कि हम ने आने वाले इमाम को मान लिया है और इसलिए मान लिया है कि हमें अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही इरशाद है।

---

ये लोग अत्याचार कर रहे हैं और इस्लाम के नाम पर और अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम पर अत्याचार हो रहे हैं कि याद रखें कि अल्लाह तआला पीड़ित को देख रहा और अत्याचार की दुआएं अल्लाह तआला के अर्श पर पहुंच रही हैं और पहुंचती है उसकी अदालत ने जब फैसला किया तो उन ज़ालिमों की न दुनिया रहेगी न परलोक। इसलिए उन्हें अल्लाह तआला की तकदीर से भी डरना चाहिए।

---

तब्लीग़ के लिए इस्लाम की सुंदर शिक्षा प्रसार करने के लिए इस्लामी आदेशों की हिकमत बताने के लिए तर्क के साथ बात की ज़रूरत है न कि इस तरह जिस तरह यह आजकल के तथाकथित उल्मा या चरमपंथी समूह कर रहे हैं। तलवार के साथ इस्लाम फैलाने का अल्लाह तआला ने कहीं आदेश नहीं दिया।

---

जब हम तब्लीग़ करते हैं और इस्लाम के शांतिपूर्ण शिक्षा दुनिया को बताते हैं तो इस्लाम विरोधी ताक़तें जो हैं हमें हमेशा यही कहती हैं कि ठीक है तुम शांतिपूर्ण हो लेकिन तुम्हें तो मुसलमान बहुमत मुसलमान ही नहीं समझते अतः तुम इस्लाम का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते। इसलिए इन परिस्थितियों में हमारे लिए चुनौती अधिक बढ़ जाती है और हर अहमदी को इस बारे में अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास करने की ज़रूरत है। उसका हर कार्य और अमल इस्लाम का नमूना हो। अगर तब्लीग़ नहीं कर रहा तो भी उसकी कथनी और करनी इस्लाम का संदेश पहुंचाने वाला हो। इस बारे में हिक्मत से अपने क्षेत्र में प्रत्येक अहमदी को काम करना चाहिए।

---

इस्लाम की शिक्षा की वास्तविकता भी उन की बहुमत को पता नहीं इसलिए हमें हर जगह जहां जमाअत की संख्या इतनी है कि प्रभावी संदेश पहुंचाने का काम कर सकें अपने पारंपरिक कार्यक्रमों के साथ जो मिशनरी कार्यक्रम प्रभावी कार्यक्रम इस्लाम के शांति और सुरक्षा के संदेश को पहुंचाने के लिए भी बनाने चाहिए। इन देशों में जहां इस्लाम के ख़िलाफ शक्तियां ज़ोर पकड़ रही हैं उनकी ताकत को तोड़ने के लिए अगर कोई प्रयास कर सकता है संगठित प्रयास तो वह जमाअत अहमदिया ही कर सकती है दूसरे मुसलमान इस्लाम की सुंदरता को प्रकट करने और इस का संदेश पहुंचाने का काम कर ही नहीं सकते इनमें वह संगठन ही नहीं है न उनके पास ज्ञान है। यह काम अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ जुड़े लोगों के द्वारा भाग्य है। इसलिए इस बात के महत्त्व को हमें समझना चाहिए।

---

**हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "इस्लाम की रक्षा और सच्चाई को उजागर करने के लिए इस्लाम की रक्षा और सच्चाई दिखाने के लिए सबसे अव्वल तो वह पहलू है कि तुम सच्चे मुसलमानों का नमूना बनकर दिखाओ और दूसरा पहलू यह है कि उसकी ख़ूबियों और कमालों को दुनिया में फैलाओ।**

---

अल्लाह तआला हमें तौफीक दे कि हम अपने जीवन को तदनुसार बिताने वाले हों। सच्चे मुसलमानों का नमूना बनने वाले हों और सारे विरोधों के बावजूद इस्लाम की खूबियों और विशेषताओं को दुनिया में फैलाने वाले बनें और सच्चे इस्लाम की रक्षा और सच्चाई प्रकट करने वालों में से हम में से हर एक बन जाए।

---

**आदरणीय मौलाना हकीम मोहम्मद दीन साहिब कादियान,आदरणीय फज़ल इलाही अनवरी साहिब जर्मनी, और आदरणीय इब्राहीम पुत्र अब्दुल्लाह अग़ज़वल साहिब मराकश की वफात, मरहूमीन क ज़िक्रे ख़ैर नमाज़ जनाज़ा ग़ायब**

---

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़,**

**दिनांक 17 मार्च 2017 ई. स्थान - मस्जिद बैतुलफ़ुतूह, मोर्डन, यू.के.**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ ۔

आजकल हम देखते हैं कि पश्चिमी और विकसित दुनिया में अत्यधिक दाईं पक्ष के राजनीतिक दल या Far-rights जिसे कहते हैं या जातिवाद या राष्ट्रवादी नेताओं और दलों की सराहना बड़ी बढ़ती रही है उनका महत्त्व बढ़ रहा है। विश्लेषक भी इस बारे में बहुत कुछ लिखते हैं कि जो मौजूदा सरकारें हैं जो वामपंथी सरकारें कहलाती हैं। या आव्रजन नीतियों में इतना सख्त नहीं हैं उन हुकूमतों की आव्रजन नीतियों की वजह से यह सब कुछ हो रहा है और इसके अलावा भी कुछ कारण हैं लेकिन इन सब बातों की तान आकर मुसलमानों पर टूटती है कि मुसलमानों को इन देशों में आने पर रोक होनी चाहिए। उन्हें रोका जाना चाहिए क्योंकि यह हमारे अंदर समाहित नहीं होते और अलग रहते हैं और अपने धर्म इस्लाम का पालन करते हैं जो उनके विचार में चरमपंथी धर्म है या फिर यह कहा जाता है कि उन्हें अगर यहां हमारे में रहना है तो उन्हें अपना धर्म और अपनी रिवायतों को छोड़कर हमारे तरीके और हमारे रहन-सहन को अपनाना होगा। अगर इस तरह नहीं करते तो इसका मतलब यह है कि यह हमारे अंदर समाहित होना नहीं चाहते और जब अपने व्यक्तित्व या धार्मिक स्थिति को कायम रखते हैं या रखना चाहते हैं तो इसका मतलब यह है कि

हमारे देश के लिए ख़तरनाक हो सकते हैं। अजीब मूर्खतापूर्ण बातें हैं कि मुसलमानों की मस्जिद के मीनार हमारे लिए खतरा हैं। उनकी महिलाओं के हिजाब हमारे लिए खतरा हैं। उनकी महिलाओं का पुरुषों से हाथ न मिलाना या पुरुषों का महिलाओं से हाथ न मिलाना हमारे लिए खतरा है। यहाँ यू.के में तो छिटपुट राजनेता ही शायद इस प्रकार की बातें करते हैं लेकिन दूसरे देशों में इस बारे में बहुत शोर है और फिर हर दिन इस बारे में नेताओं के बयान आ रहे हैं और फिर यह तर्क भी देते हैं कि देखो मुसलमानों का हमारे लिए खतरा होना इस बात से भी साबित होता है कि मुस्लिम देशों में आतंकवाद और अराजकता चर्म को पहुंची हुई है और यहाँ हमारे देश में भी चरमपंथियों के हमले मुसलमानों की तरफ से ही ज्यादातर हो रहे हैं।

उन की बाकी बातें तो इस्लाम के विरोध में हैं लेकिन दुर्भाग्य से यह बात उनकी सही है कि मुस्लिम देशों में आतंकवाद है और यहां हमले हो रहे हैं और यह बात जो है, यह आरोप जो है यह भी, जैसा कि मैंने कहा मुसलमानों की तरफ से उनके हाथ में दिया गया है क्योंकि मुस्लिम देशों में आतंकवाद भी बहुत अधिक है, चरमपंथ भी है और यहां हमले भी हो रहे हैं।

चाहे इस बात के कि चरमपंथी समूहों और मुस्लिम देशों में विद्रोही गुटों को हथियार पश्चिमी देशों से ही मिलते हैं और अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए और इस्लाम के खिलाफ जो द्वेष है इस को व्यक्त करने के लिए कुछ शक्तियों ने बड़ी होशियारी से इन समूहों को संगिठत किया है। एक ओर सरकारों को स्पष्ट और गोपनीय सहायता दी जा रही है और दूसरी ओर विद्रोहियों और चरमपंथी गिरोहों की किसी न किसी तरीके से मदद की जाती है। अगर यह मदद न हो तो कोई गिरोह या सरकार इतना लंबा समय लड़ाई नहीं लड़ सकते।

दुर्भाग्य यह है कि मुसलमानों को जब भी नुकसान पहुंचा है मुसलमानों के अपने कर्म और षड्यंत्रों और बग़ावतों और एक दूसरे के अधिकार न अदा करने और निजी हितों को राष्ट्रीय और कौमी हितों पर प्राथमिकता देने से ही पहुंचा है। इस्लाम की शिक्षा को भूलने और अपने उद्देश्य को नज़र अंदाज करने से ही पहुंचा है। बजाय इसके कि अपनी आध्यात्मिक हालत में सुधार करते और अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञाओं का पालन करते दुनिया के लालच और सांसारिक सम्मान, और लक्ष्य शासकों के भी अन्य नेताओं के भी और उलमाओं की भी पसंद बन गए हैं और उलेमा ने उम्मत को और अधिक अंधकार की गहराई में धकेलने में अपनी भूमिका धर्म की आड़ में अदा की है और कर रहे हैं। बजाय इसके कि समय की स्थिति को देखते हुए और अल्लाह तआला के वादों को सामने रखते हुए इन स्थितियों का जो निहित था इन पर विचार करते और यह देखते कि हम ऐसे हालात में उस व्यक्ति की खोज करें जिसके बारे में अल्लाह तआला ने पहले ही बता दिया था कि ऐसे हालात में वह ईमान को सुरैया से वापस लाएगा और इस्लाम की पहचान को और मुसलमानों के ईमान को फिर से स्थापित करेगा। ये लोग न केवल इस बात से लापरवाह हो गए बल्कि अल्लाह तआला के भेजे हुए के विरोध में इस कदर बढ़ गए कि दुनिया के हर मुसलमान देश में जा-जा जाकर बल्कि ग़ैर मुस्लिम देशों में भी जा जा कर उसके खिलाफ द्वेष व शत्रुता और दुश्मनी की ऐसी चरम की जिसकी कोई सीमा नहीं, बल्कि अल्लाह तआला ने अपने वादे के अनुसार जिसे भेजा था उसके मानने वालों को भी जुल्म व अत्याचार की सीमा कर दी। पाकिस्तान में तो कानून की आड़ में यह जुल्म व अत्याचार के बाज़ार गर्म हैं वहाँ तो कई वर्षों से कई दशकों से बल्कि कहना चाहिए हो ही रहा है कुछ और इस्लामी देशों में भी मुल्ला के डर और ज़ालिम अधिकारियों के कारण अहमदी संकट का शिकार रहे और हो रहे हैं या उन्हें गुज़रना पड़ा। कुछ जगह अब अपेक्षाकृत हालात बेहतर हो रहे हैं कितना समय रहते हैं? अल्लाह तआला रहम करे और हमेशा रहें और अहमदी सुरक्षित रहें लेकिन आजकल अल्जीरिया में यह अत्याचार बढ़ रहा है। पुलिस अहमदियों को परेशान कर रही है अदालतें अपनी इच्छा के निर्णय करके अहमदियों को जेलों में डाल रहे हैं और कुछ को एक साल से तीन साल तक की जेल की सज़ा मिली है सिर्फ इसलिए कि उन्होंने यह कहा कि हम ने आने वाले इमाम को मान लिया है और इसलिए मान लिया है कि हमें अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का यही इरशाद है। ये लोग जो जेल में हैं या जिन्हें सज़ा दी गई है या पुलिस कस्टडी में सज़ा का इंतजार कर रहे हैं और या जिन्हें परेशान किया गया उनकी संख्या भी दो सौ से ऊपर है और सब ने बावजूद इन कठोरताओं के इस बात का इज़हार क्या है कि जो भी सख्ती हम पर कर लें हम अपने ईमान से पीछे हटने वाले नहीं हैं।

इसलिए अहमदी तो जब इस बात की घोषणा करता है कि मैंने अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हर बात पर प्राथमिकता देनी है हर दूसरी चीज़ पर प्राथमिकता देनी है और इसके लिए बड़ी से बड़ी कुर्बानी भी करनी पड़ी तो करनी तो फिर उस के ईमान से उसे कोई नहीं हिला सकता लेकिन ये लोग अत्याचार कर रहे हैं और इस्लाम के नाम पर और अल्लाह तआला और उसके रसूल के नाम पर अत्याचार हो रहे हैं कि याद रखें कि अल्लाह तआला पीड़ित को देख रहा है और पीड़ित की दुआएं अल्लाह तआला के अर्श पर पहुंच रही हैं और पहुंचती है उसकी अदालत ने जब फैसला किया तो उन ज़ालिमों की न दुनिया रहेगी न परलोक। इसलिए उन्हें अल्लाह तआला की तकदीर से भी डरना चाहिए और बजाय अहमदियों पर जुल्म ढाने की अपनी स्थितियों को देखें। ये लोग इस्लाम की सुंदर शिक्षा की बदनामी का जो कारण बन रहे हैं, ये देखें कि क्या यह उद्देश्य अल्लाह तआला ने उनके जीवन का बताया था।?

ये उल्मा जिनके फतवों के पीछे शासक और अन्य अदालतों के काज़ी और न्यायाधीश चल रहे हैं अगर इस्लाम का अगर दर्द रखने वाले होते तो इस्लाम की ऐसी हालत में जब हर तरफ से इस्लाम पर आपत्ति हो रही हैं सब उलेमा एक हो कर सोचते कि अल्लाह तआला के वादे तो इस्लाम के दुनिया में फैलने के हैं लेकिन यहाँ तो उल्टा इस्लाम इन हरकतों से बदनाम हो रहा है यह क्या कारण है? क्या आतंकवादी और चरमपंथी संगठनों द्वारा विजयी होगा? क्या अल्लाह तआला ने फरमाया था कि हत्याऐं करके इस्लाम का प्रसार करो? क्या इस्लाम के पास बराहीने और तर्क नहीं हैं जिनसे यह फैलाया जाए।? क्या केवल तलवार और विरोधी संप्रदायों को लोगों और अन्य धर्मों के लोगों मासूम महिलाओं और बच्चों को कत्ल कर के और बुजुर्गों को कत्ल करके इस्लाम की सेवा होगी? अगर यह उनकी सोच है और अक्सर उलमा को अत्याचार पूर्ण कर्म हैं उन से यही नज़र आता है कि यही उनकी सोच है तो ये लोग हैं जो अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के आदेश के अवज्ञाकारी हैं। ऐसे कर्म अल्लाह तआला की पकड़ का कारण बन सकते हैं। अहमदियों पर अत्याचार करके और इस्लाम के नाम पर ग़लत काम करके उन्हें सफलता तो मिलनी नहीं। अपनी सरकार और शक्ति के बलबूते पर जिसे यह अपनी सफलता समझ रहे हैं उन्हें याद रखना चाहिए कि एक दिन अल्लाह तआला के समक्ष भी हाज़िर होना है और वहाँ उनके ज़ुल्मों का जवाब भी देना होगा।

मुसलमानों की हालत भी इस समय अजीब हुई है एक तरफ तो तथाकथित मौलवियों का वर्ग है या चरमपंथी लोगों का वर्ग है जिस ने जैसा कि मैंने कहा हर तरफ इस्लाम के नाम पर अपनों और ग़ैरों के ख़िलाफ फसाद बरपा किया हुआ है और दूसरी ओर वे लोग हैं जो उनकी प्रतिक्रिया के रूप में या पश्चिम और दुनियादारी के प्रभाव के अधीन धर्म के प्रति उदासीन हैं। विश्वास से इस्लामी शिक्षा के गुणों का वर्णन करने के स्थान पर उदासीन हैं या भयभीत हैं। कुछ चीजों में इस्लामी शिक्षा के गुणों का वर्णन करने के स्थान पर और दुनियादारों की बातों को ग़लत कहने के स्थान पर उनकी हां में हां मिला देते हैं और इस्लामी शिक्षा के ग़लत अर्थ और निर्देश करते हैं कि यह नहीं इसका मतलब तो यह था यह था। उन लोगों पर दुनिया का डर अल्लाह तआला के भय पर हावी है। इसी तरह कुछ राजनीतिज्ञ शासक हैं। धर्म से उनका लोगों का कुछ लेना-देना नहीं है। अगर मौलवी से सहमत न भी हों तो अपनी कुर्सी छिन जाने के डर से कि कहीं मौलवी लोगों को हमारे ख़िलाफ न भड़का दे ये कायरता और अपने सांसारिक स्वार्थों की वजह से उन पर ग़ालिब आ जाती हैं ये चुप हैं। मानो कि मुसलमानों में से हर वर्ग जिसने अल्लाह तआला के भेजे हुए का इनकार किया वह अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की आज्ञाओं से दूर चला गया है। चाहे धर्म के नाम पर अपनी दुकान चमकाने वाले मौलवी हैं। आरोप तो हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को देते हैं कि नऊज़ो बिल्लाह आप ने मसीह और महदी होने का दावा करके दुकानदारी बनाई हुई है लेकिन वास्तव में इन लोगों ने आसान कमाई और दुकान चमकाने के द्वारा हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के विरोध को बनाया हुआ है। तर्क उनके पास कोई नहीं जिसके आप कारण अक्सर देखेंगे कि गालियां ही देते हैं बहरहाल धर्म के नाम पर यह दुकानदारी करने वाला वर्ग है या दुनियादारी के लिए धर्म को माध्यमिक स्थिति देने वाला वर्ग है ये सब लोग नाम के मुसलमान हैं इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से उनका कोई वास्ता नहीं है।

ऐसे हालात में अहमदियों को सोचना चाहिए कि जब उन्होंने ज़माने के इमाम को स्वीकार किया है तो उन पर बहुत बड़ी ज़िम्मेदारी है। विरोधियों ने उन पर जुल्म तो करने ही हैं और इसी तरह धर्म से दूर हटे हुए जो लोग हैं और ख़ुदा तआला का

इन्कार करने वाले जो हैं उन्होंने भी तब हमारा विरोध करना है जब हम उन बातों को जो स्वतंत्रता के नाम पर ग़लत बातें करते हैं या नियम बनाते हैं उनके ख़िलाफ हम बात करेंगे तब उन लोगों ने हमारे ख़िलाफ होना है। अत: क्या ऐसे में हम भयभीत हो कर चुप हो जाएं या बेईमानी कमज़ोरी दिखाते हुए उनकी हां में हां मिलाने लग जाएं। अगर हम ने भी ऐसा ही करना है तो फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की बैअत में आने का क्या लाभ? हमें तो आप ने आकर बताया कि तुम ने अल्लाह तआला की आज्ञाओं के अनुसार चलना है और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का पालन करना है अपने ईमान को भी बर्बाद नहीं करना और दंगों को भी पैदा नहीं होने देना और साथ ही यह भी बात सामने रखनी है कि अल्लाह तआला के संदेश को दुनिया तक पहुंचाना भी है ताकि तौहीद की स्थापना हो और इस्लाम की सुंदर शिक्षा को दुनिया में फैलाया जाए और दुनिया की बहुमत इस शिक्षा को मानने वाली हो। आपने फरमाया कि इसके लिए अल्लाह तआला ने कुरआन में जो हमारा मार्गदर्शन फरमाया है उसके अनुसार चलो और वह यह है कि اُدۡعُ اِلٰی سَبِیۡلِ رَبِّکَ بِالۡحِکۡمَۃِ وَ الۡمَوۡعِظَۃِ الۡحَسَنَۃِ وَ جَادِلۡہُمۡ بِالَّتِیۡ ہِیَ اَحۡسَنُ(सूरह अन्नहल :126) अर्थात अपने रब्ब के रास्ते की तरफ ज्ञान के साथ और अच्छी नसीहत के साथ बुला और उनके साथ ऐसी दलील के साथ चर्चा कर जो सर्वोत्म हो।

इसलिए तब्लीग़ के लिए इस्लाम की सुंदर शिक्षा के प्रसार करने के लिए, इस्लामी आदेशों की हिकमत बताने के लिए दलील के साथ बात की ज़रूरत है न कि इस तरह जिस तरह यह आजकल के तथाकथित उल्मा या चरमपंथी समूह कर रहे हैं। तलवार के साथ इस्लाम फैलाने का अल्लाह तआला ने कहीं आदेश नहीं दिया। फिर जो दुनियादार देश हैं और जो सरकारें हैं उनमें भी कुछ बातें जो प्रचलित हो गई हैं या ऐसी बातों को कानून संरक्षण देता है जिनकी धर्म अनुमति नहीं देता और धर्म के निकट वह न केवल नैतिकता से गिरी हुई बातें हैं बल्कि गुनाह भी हैं उनके बारे में अगर हम ने बात करनी है अगर दूसरा पक्ष इस पर क्रोध में आता है तो अस्थायी रूप से इस बात को टाला जा सकता है, वहाँ से सलाम करके उठा जा सकता है। यही इस समय हिक्मत की मांग होगा लेकिन यह नहीं हो सकता है कि हम इसलिए कि कानून बन गया या दूसरा पक्ष क्रोध में आ गया हम उनकी हां में हां मिलाने लग जाएं। अगर भयभीत होकर या दुनियादारी से प्रभावित होकर हां में हां मिलाते हैं तो यह ग़लत है और फिर हम इस गुनाह में शामिल हो जाते हैं।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "جَادِلۡہُمۡ بِالَّتِیۡ ہِیَ اَحۡسَنُ से यह इच्छा नहीं है कि हम इतनी नरमी करें कि मदाहना(हां में हां मिलाकर) कर के घटना के ख़िलाफ पुष्टि कर लें।

(तिर्याकुल कुलूब रूहानी ख़ज़ायन भाग 15 पृष्ठ 305 हाशिया)

अत: हिक्मत का मतलब यह नहीं है कि कायरता दिखाई जाए बल्कि सही बात को बिना हिंसा के कहने में है या ऐसे तरीके से की जाए कि जिससे फसाद पैदा न हो और जो इस बात के कहने का हक है वह भी अदा हो जाए।

अत: एक मोमिन को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि कायरता और हिक्मत में क्या अंतर है जो इस्लाम के स्पष्ट आदेश हैं और जिन्हें इस्लाम ग़लत कहता है उस को हम ने नहीं करना और ग़लत ही कहना है और साथ ही यह भी है कि कानून हाथ में लेकर लड़ाई नहीं करनी।

फिर एक जगह इस बारे में अधिक विवरण फरमाते हुए हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"जब तू किसी..... के साथ बहस करे तो हिकमत और नेक नसीहतों के साथ चर्चा कर जो नरमी और सभ्यता से हो। हाँ, यह सच है कि बहुत से इस समय के अज्ञानी और मूर्ख मौलवी अपनी मूर्खता से यही विचार रखते हैं कि जिहाद और तलवार से धर्म को फैलाना बहुत सवाब की बात है और वह छुपे हुए पाखंड से जीवन व्यतीत करते हैं लेकिन वे ऐसे विचार में सख्त ग़लती पर हैं और उनकी ग़लतफहमी में इलाही किताब पर आरोप नहीं आ सकता।" (अगर वे ऐसी बातें करते हैं तो उनकी ग़लती है इसका मतलब यह नहीं है कि अल्लाह तआला की किताब पर आरोप आए।) फरमाया कि "वास्तव में सत्य और वास्तविक सदाकतें किसी उत्पीड़न की मोहताज नहीं होती बल्कि दमन इस बात पर तर्क ठहरता है कि आध्यात्मिक तर्क कमज़ोर हैं वह ख़ुदा जिसने अपने पवित्र रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर यह वह्यी नाज़िल की कि فَاصۡبِرۡ کَمَا صَبَرَ اُولُوا الۡعَزۡمِ (सूरह अल्अहकाफ: 36 ) अर्थात तू ऐसा सबर कर जो सभी हिम्मत वाले रसूलूं के धैर्य के बराबर हो अर्थात अगर नबियों का धैर्य जोड़ दिया जाए तो वह तेरे धैर्य से अधिक न हो और फिर फरमाया कि لَاۤ اِکۡرَاہَ فِی الدِّیۡنِ(अल्बकर: 257) अर्थात धर्म में बाध्यता नहीं चाहिए और फिर फरमाया कि اُدۡعُ اِلٰی سَبِیۡلِ رَبِّکَ بِالۡحِکۡمَۃِ وَ الۡمَوۡعِظَۃِ الۡحَسَنَۃِ وَ جَادِلۡہُمۡ بِالَّتِیۡ ہِیَ اَحۡسَنُ(सूरह अन्नहल :126) अर्थात हिक्मत और नेक उपदेशों के साथ मुबाहिसा कर न सख्ती से और फिर फरमाया وَ الۡکٰظِمِیۡنَ الۡغَیۡظَ وَ الۡعَافِیۡنَ عَنِ النَّاسِ(आले इम्रान :135)अर्थात मोमिन वही हैं जो ग़ुस्सा को खा जाते हैं और बेहूदा बकने वालों और अन्यायपूर्ण तबीयत वाले लोगों के हमले को माफ कर देते हैं और बेहूदगी का बेहूदगी से जवाब नहीं देते।" फरमाया कि "क्या ऐसा ख़ुदा यह शिक्षा दे सकता है कि अपने धर्म का इन्कार करने वालों को मार दो और उनके माल लूट लो और अपने घरों को उजाड़ दो बल्कि इस्लाम की प्रारंभिक कार्रवाई जो अल्लाह तआला के आदेश के अनुसार थी सिर्फ इतनी थी कि जिन्होंने ज़ुल्म से तलवार उठाई वे तलवार से ही मारे गए और जैसा किया वैसा अपना बदले में पा लिया।" फरमाया कि "यह कहाँ लिखा है कि तलवार के साथ इन्कार करने वालों की हत्या करते फिरो। यह तो अज्ञानी मौलवी और नादान पादरियों का विचार है जिस की कुछ भी वास्तविकता नहीं"

(तब्लीग़े रिसालत (मजमूआ इश्तेहारात) जिल्द 3 पृष्ठ 194 हशिया तफसीर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम)

जो मौलवी हैं इस्लाम के प्रसार के तथाकथित वाहक बने फिरते हैं या वे लोग जो यह कहते हैं या जो इस्लाम के विरोधी लोग हैं वे यह कहते हैं कि इस्लाम कहता है कि मनकरों हत्या करो।(हलांकि) कहीं नहीं लिखा।

अत: यह है इस्लाम की शिक्षा जिस पर दूसरे मुसलमान तो अनुकरण नहीं करते या इसलिए कि उन्हें इस्लाम का संदेश पहुँचाने से रुचि नहीं है या क्योंकि जैसा कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने फरमाया। मूर्ख और अज्ञानी मौलवी हैं। लेकिन हम ने मुसलमानों में भी और ग़ैर मुसलमानों में भी यह शिक्षा आम करनी है। अत: अपने अपने क्षेत्र में, अपने अपने दायरे में, हर अहमदी को इस ओर ध्यान देने की ज़रूरत है क्योंकि पहले अगर ये लोग छुपे हुए थे और पाखंड का जीवन बिता रहे थे लेकिन इस्लाम की चरमपंथी शिक्षा का नज़रिया रखते थे तो अब ऐसे समूह हैं जो खुलेआम ऐसी बातें करते हैं और फिर दूसरों को ही नहीं बल्कि मुसलमान मुसलमान की गर्दन काट रहा है और इस्लाम को बदनाम कर रहे हैं। अहमदियों के खिलाफ तो यह सब हैं ही। एक संप्रदाय दूसरे समुदाय के ख़िलाफ और एक समूह दूसरे समूह के ख़िलाफ भी हत्या, मारधाड़ कर रहा है। ऐसे में अहमदियों का काम बहुत बढ़ गया है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि "याद रखो जो सख्ती करता है और क्रोध में आ जाता है उसकी ज़बान से मआरिफ़ और ज्ञान की बातें कभी नहीं निकल सकतीं। वह दिल ज्ञान की बातों से वंचित किया जाता है जो अपने प्रतिद्वंद्वी के सामने जल्द क्रोध में आकर सीमा से बाहर हो जाता है। गंदा बोलने वाले और बेलगाम के होंठ मआरिफ के चश्मे से बे-नसीब और वंचित किए जाते हैं। क्रोध और ज्ञान दोनों जमा नहीं हो सकते।" फरमाया कि "जो बहुत अधिक क्रोध में होता है उसकी बुद्धि मोटी और समझ कुंद होती है। उसे कभी किसी क्षेत्र में प्रभुत्व और सहायता नहीं दी जाती। ग़जब आधा जुनून है जब यह अधिक बढ़ता है तो पूरा जुनून हो सकता है।

(मल्फूज़ात भाग 5 जिल्द 126-127 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

अत: जब क्रोध और जुनून हो तो इंसान फिर बुद्धि की बातें नहीं करता और यही हम दूसरों में देखते हैं। हमारे ख़िलाफ तो मौलवी हर जगह यह कर्म दिखा रहा है और उसका यह कर्म केवल हमारे ख़िलाफ नहीं है, इस्लाम को भी बदनाम कर रहा है। जब हम तब्लीग़ करते हैं और इस्लाम के शांतिपूर्ण शिक्षा दुनिया को बताते हैं तो इस्लाम विरोधी ताक़तें जो हैं हमें हमेशा यही कहती हैं कि ठीक है तुम शांतिपूर्ण हो लेकिन तुम्हें तो मुसलमान बहुमत मुसलमान ही नहीं समझते अत: तुम इस्लाम का प्रतिनिधित्व नहीं कर सकते ।

इसलिए इन परिस्थितियों में हमारे लिए चुनौती अधिक बढ़ जाती है और हर अहमदी को इस बारे में अपनी ज़िम्मेदारी का एहसास करने की ज़रूरत है। उसका हर कार्य और अमल इस्लाम का नमूना हो। अगर तब्लीग़ नहीं कर रहा तो भी उसकी कथनी और करनी इस्लाम का संदेश पहुंचाने वाली हो। फिर तब्लीग़ के लिए हमें हज़रत अली रज़ियल्लाहो अन्हो की हिक्मत की इस बात को भी सामने रखना चाहिए। आपने फरमाया कि "दिल की कुछ इच्छाएं और मिलान होते हैं जिनकी वजह से वे किसी समय बात सुनने के लिए तैयार रहते हैं और किसी समय इसके लिए तैयार नहीं होते। कभी व्यक्ति कोई बात सुनने के लिए तैयार होता है कभी नहीं

होता। इसलिए लोगों के दिलों में उनकी आदतों के अनुसार प्रवेश किया करो। (यह देखा करो कि इस समय क्या स्थिति है और फिर उसके अनुसार बात करो) और तब अपनी बात कहा करो जब वह बात सुनने के लिए तैयार हो।

(उद्धरित नहजुल बलाग़: भाग 4 रिवायत नम्बर 506 प्रकाशन दारुल मअरफत बैरूत 2005 ई)

इसलिए इस हिक्मत को हमें अपनाना चाहिए।

फिर हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने मार्गदर्शन फरमाया कि "चाहिए कि जब बात करे तो सोच कर और कम काम की बात करे। बहुत बहसें करने से कुछ लाभ नहीं होता।" फरमाया कि "बस छोटा सा लतीफा किसी समय छोड़ दिया जाए और सीधा कान के अंदर चला जाए। फिर कभी संयोग हुआ तो फिर सही।"

(मल्फूज़ात भाग 10 पृष्ठ 119 प्रकाशन 1985 ई यू, के)

अब ये बातें तब हो सकती हैं जब स्थायी सम्पर्क हों। स्वतंत्रता के नाम पर ख़ुदा तआला के कानून से टकराने और स्वतंत्रता के नाम पर अनैतिक बातों को नैतिकता की श्रेणी में लाने की जो धर्म विरोधी ताकतें हैं कोशिश कर रही हैं। हम हिकमत की बातों और स्थायी संपर्कों और प्रयास से ही उनको रद्द कर सकते हैं उन का तोड़ कर सकते हैं।

अब ऑस्ट्रेलिया में अगर एक वर्ग इस्लाम दुश्मनी में यहां तक पहुंच गया है कि अगर मुसलमान पुरुष महिलाओं से या औरतें पुरुषों से हाथ नहीं मिलाते तो उन्हें देश से निकाल देना चाहिए। या हिजाब के बारे में कुछ लोग ख़िलाफ हैं या कुछ देशों में मस्जिदों और मीनारों के ख़िलाफ हैं या नीदरलैंड के एक राजनीतिज्ञ का बयान है कि सभी मुसलमानों को ही देश से निकाल दो या एक विशिष्ट देश के मुसलमानों को देश से निकाल दो या अमेरिका के राष्ट्रपति कुछ मुसलमानों देशों के लोगों पर प्रतिबंध लगाना चाहता है। तो यह वास्तव में इस्लाम विरोधी सोच का नतीजा है। यह सारी बातें और कुछ मुस्लिम समूहों के कर्म उसे हवा देने वाले हैं लेकिन साथ ही इस्लाम की शिक्षा की वास्तविकता भी उन की बहुमत को पता नहीं। इसलिए इस बारे में हिक्मत से अपने अपने क्षेत्र में हर अहमदी को काम करना चाहिए। हर जगह जहां जमाअत की संख्या इतनी है कि प्रभावी संदेश पहुंचाने का काम कर सकें वहां हमें अपने पारंपरिक कार्यक्रमों के साथ जो तब्लीग़ी कार्यक्रम हैं, इस्लाम के शांति और सुरक्षा के संदेश को पहुंचाने के लिए भी प्रभावी कार्यक्रम बनाने चाहिए। इन देशों में जहां इस्लाम के ख़िलाफ शक्तियां ज़ोर पकड़ रही हैं उनकी ताकत को तोड़ने के लिए अगर कोई संगठित प्रयास कर सकता है तो वह जमाअत अहमदिया ही कर सकती है। दूसरे मुसलमान इस्लाम की सुंदरता को प्रकट करने और इस का संदेश पहुंचाने का काम कर ही नहीं सकते। इनमें वह संगठन ही नहीं है न उनके पास ज्ञान है। यह काम अब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के साथ जुड़े लोगों के द्वारा भाग्य है। इसलिए इस बात के महतेत्व को हमें समझना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम एक जगह कहते हैं "जितने ज़ोर से झूठ सच्चाई का विरोध करता है उतना ही सच्चाई की शक्ति और ताकत तेज़ होती है।" फरमाया ".....यह स्वाभाविक नज़ारा है सच्चाई का जितना ज़ोर से विरोध हो इतना वह चमकती और अपनी शौकत दिखाती है।" आप फरमाते हैं कि "हम ने ख़ुद आज़मा कर देखा है कि जहां जहां हमारे बारे में शोरगुल हुआ है वहाँ एक जमाअत तैयार हो गई है और जहां लोग..... सुनकर चुप हो जाते हैं वहाँ अधिक तरक्की नहीं होती।

(मल्फूज़ात भाग 5 पृष्ठ 310-311 संस्करण 1985 ई यू.के)

इसलिए इस विरोध में जहां मुसलमानों की तरफ से विरोध है वहाँ हम देखते हैं कि अहमदियत का परिचय हो रहा है और विकास भी हो रहा है। अल्जीरिया में भी हमारी जमाअत की तब्लीग़ से शायद जमाअत का हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का इतना परिचय नहीं होता जितना इन मामलों और हमारे ख़िलाफ अख़बारों में लिखने की वजह से हुआ है और नेक तबीयतों पर इसका नेक प्रभाव हो रहा है। इसी तरह ग़ैर मुस्लिम देशों में भी जब इस्लाम के ख़िलाफ माहौल है हमें अधिकतम अहमदियत और वास्तविक इस्लाम को परिचित करवाने की कोशिश करनी चाहिए। जैसा कि मैंने कहा कि शांति की शिक्षा को फैलाना चाहिए इससे शायद एक वर्ग में हमारा विरोध भी बढ़ेगा। कुछ जगह ऐसे नमूने सामने आ भी रहे हैं कि ग़ैरों में भी ईसाइयों में भी विरोध बढ़ता है। जैसे पूर्वी जर्मनी में जमाअत के ख़िलाफ राष्ट्रवादी बहुत कुछ कहते हैं लेकिन नेक स्वभाव दिलों पर इसका सकारात्मक असर भी हो रहा है। जमाअत की शुरूआत हो रही है। तो इस से हमें भयभीत होने की स्थान पर ख़ुश होकर अपने काम को तेज़ करना चाहिए और हर अहमदी को अपने नमूने और अपनी अभिव्यक्ति से तब्लीग़ का हिस्सा बनना चाहिए।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फरमाते हैं कि

"इस्लाम की रक्षा और सच्चाई को उजागर करने के लिए इस्लाम की रक्षा और सच्चाई दिखाने के लिए सबसे अव्वल तो वह पहलू है कि तुम सच्चे मुसलमानों का नमूना बनकर दिखाओ और दूसरा पहलू यह है कि उसकी ख़ूबियों और कमालों को दुनिया में फैलाओ।"

(मल्फूज़ात जिल्द 8 पृष्ठ 323 प्रकाशन 1985 ई यू.के)

अल्लाह तआला हमें तौफीक दे कि हम अपने जीवन को तदनुसार बिताने वाले हों। सच्चे मुसलमानों का नमूना बनने वाले हों और सारे विरोधों के बावजूद इस्लाम की खूबियों और विशेषताओं को दुनिया में फैलाने वाले बनें और सच्चे इस्लाम की रक्षा और सच्चाई प्रकट करने वालों में से हम में से हर एक बन जाए।

नमाज़ों के बाद कुछ जनाज़ा ग़ायब पढ़ाऊंगा। पहला जनाज़ा ग़ायब आदरणीय मौलाना हकीम मोहम्मद दीन साहिब कादियान का है जो आदरणीय मुहम्मद अज़ीजुज्द्दीन साहिब के बेटे थे। 15 मार्च 2017 ई को 97 साल की उम्र में उनकी वफात हो गई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उनके दादा हज़रत हकीम मौलवी वज़ीर दीन साहिब हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के सहाबी थे और तीन सौ तेरह सहाबियों की सूची में उनका नाम हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपनी दो पुस्तकों "आइना कमालात इस्लाम" और "ज़मीमा अंजाम आथम" में दर्ज किया है। हज़रत हकीम मौलवी वज़ीर दीन साहिब कांगड़ा में एक मदरसे के हेड मास्टर थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भविष्यवाणी के अनुसार 1905 में कांगड़ा में जो भयानक भूकंप आया था इस में आप और मदरसे के छात्र चमत्कारिक ढंग से बच गए। हकीम मुहम्मद दीन साहिब मरहूम जून 1920 ई को मुकेरियां ज़िला होशियारपुर में पैदा हुए। मैट्रिक परीक्षा लाहौर और इंटर की परीक्षा कादियान से पास की। मुंशी फाज़िल की डिग्री हासिल की। दो साल तिबय्या कॉलेज लाहौर में अध्ययन किया। वहाँ हाज़िक हकीम की डिग्री हासिल की। 1939 से 1944 ई तक रेलवे विभाग में सहायक स्टेशन मास्टर के रूप में काम किया। फिर 1943 ई में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो की तहरीक पर वक्फ ज़िन्दगी के लिए आवेदन किया। तब हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी ने इरशाद फरमाया कि अपना काम जारी रखें और तब्लीग़ करते रहें लेकिन हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहो अन्हो के भाषण को सुनकर उनकी इच्छा यही थी कि वक्फ और नियमित मुबल्लिग़ के रूप में कार्य करें और अंत फिर उसी इच्छा के कारण और लगातार हज़रत ख़लीफतुल मसीह सानी को लिखते रहने की वजह एक समय आया जब उन्हें बतौर मुबल्लिग़ के ले लिया गया और उन्हें बंबई में मुबल्लिग़ इंचार्ज बना दिया गया। पहले उन्होंने मौलाना अब्दुल रहीम नय्यर साहिब के अधीन सहायक के रूप काम किया। फिर ख़ुद उन्हें मुबल्लिग़ इन्चार्ज बनाया गया। कुल मिलाकर 25 साल तब्लीग़ के क्षेत्र में सेवा करने की तौफीक़ पाई। 1972 ई के अंत में कादियान केंद्र में बुला लिया गया। यहाँ मदरसा अहमदिया में पहले शिक्षक नियुक्त हुए फिर बारह साल बतौर हेडमास्टर मदरसा अहमदिया सेवा करने की तौफीक़ मिली। नाज़िम दारुलकज़ा, सदर मजलिस अंसारुल्लाह भारत और मैम्बर फिर सदर मजलिस कारपरदाज़ के रूप में सेवा की तौफीक मिली। नाज़िम वक्फ जदीद भी बनाए गए और 2011 ई में उन्हें सदर सदर अंजुमन अहमदिया बनाया था और 2014 ई तक यह सदर सदर अंजुमन अहमदिया की रूप में सेवा करते रहे इस लिहाज़ से उनकी जो सेवा का समय है बहुत व्यापक है। कई वर्षों में फैला हुआ है। उन्हें हज बदल के रूप में हज बैतुल्लाह की भी तौफीक मिली। कुरआन की तिलावत बड़ी उम्दा करते थे। आवाज़ भी बड़ी ऊंची थी। उनकी वसीयत पहले 1/10 थी फिर उन्होंने 1/7 और फिर 1/5 के

मूसी थे। बड़े बे नफ्स इंसान थे। बड़ी विनम्रता से और विनय से उन्होंने हमेशा सेवा की। अपने से बहुत जूनियर के भी अधीन रहे पूर्ण आज्ञाकारिता के साथ अपने जूनियर मुरब्बियों के अधीन भी काम किया। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर बढ़ाए और उनकी नस्ल इस समय बेटियों तीन पाकिस्तान में हैं तीन भारत में ही हैं। दो बेटे हैं जो जमाअत की सेवा कर रहे हैं अल्लाह तआला उन्हें भी सच्चाई और ईमानदारी से अपनी बैअत के वादा को निभाने और सेवा करने की शक्ति प्रदान करे।

दूसरा जनाज़ा आदरणीय फज़्ल इलाही अनवरी साहिब पुत्र आदरणीय मास्टर इमाम अली साहिब का है जो 4 मार्च 2017 ई को 90 साल की उम्र में जर्मनी में वफात पा गए। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन । 16 अप्रैल 1927 ई को यह भैरह में पैदा हुए और 1946 ई में तालीमुल इस्लाम कॉलेज कादियान से एफ.एस.सी की परीक्षा पास की। 1947 ई में अपने आप को वक्फ करने के लिए पेश किया फिर उसके बाद उन्होंने बी.एस.सी में दाख़िला लिया और 1950 ई में गवर्नमेंट कॉलेज लाहौर से बी.एस.सी की। 1951 ई में जामियतुल मुबश्शरीन में प्रवेश किया और फिर उसके बाद उनकी सेवाओं का सिलसिला काफी लंबा है। 1956 ई में बतौर मुबल्लिग़ घाना भिजवाया गया। 1960 ई तक वहां रहे। 1960 ई से 1964 ई तक जामिया अहमदिया रबवा में शिक्षक रहे। 1964 के बाद से 1967 ईसवी तक पश्चिमी जर्मनी के मुबल्लिग़ रहे। फिर 1968 ई में अफ्रीका में नाइजीरिया भेजे गए। 1972 ई तक वहां रहे। 1972 ई में फिर जर्मनी आए और 1977 ई तक वहां कार्य किया। 1979 ई में हदीकतुल मुबश्शेरीन में सैक्रेटरी के रूप में काम किया। एडीशनल नाज़िर इस्लाह व इरशाद तालीमुल कुरआन भी नियुक्त हुए। और 1982 ई में जाम्बिया में मुबल्लिग़ के रूप में गए। 1983 ई तक फिर वहाँ रहे तो उनका नाइजीरिया बतौर मुबल्लिग़ तबादला हो गया और 1986 ई तक वहां रहे। 1986 ई में वापस पाकिस्तान गए जामिया अहमदिया में बतौर शिक्षक सेवा की तौफ़ीक़ पाई और 1988 ई में आप की नियुक्ति फिर वकालत तसनीफ में हुई। 1988 ई तक सिलसिला की सेवा की तौफीक पाई तो इस के बाद आप की सेवानिवृत्ति हुई उसके बाद आप जर्मनी में थे। जर्मनी में भी 1974 ई की स्थिति के बाद आप ने वहाँ अहमदियों को जर्मनी में मंगवाने और आव्रजन दिलवाने का बड़ा काम किया जिसे हज़रत ख़लीफतुल मसीह सालिस ने बड़ा पंसद किया और वहां रहने वाले जो पुराने अहमदी उन्होंने मुझे लिखा है। जैसे इरफान खान साहिब ने मुझे लिखा है पिता की तरह हमें उन्होंने वहां रखा उस समय जमाअत की वित्तीय स्थिति भी अच्छी नहीं थी तो यहां तक ध्यान करते थे कि हम पानी न बर्बाद करें और वुज़ू करते हुए हमारे पीछे खड़े हो जाया करते थे कि पानी बर्बाद तो नहीं कर रहे। उस समय वहां अधिकतर यवाओं की थी तो आप ने उन्हें ने नियमित जमाअत के साथ जुड़े रखा और उन्हें प्रशिक्षित भी करते रहे। बड़े संतोष पसंद थे। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और उनकी नस्ल को भी उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफीक़ प्रदान करे। उन्होंने दरवेशान की विभिन्न गुणों पर कुछ पुस्तकें भी लिखी हैं।

तीसरा जनाज़ा मोरक्को से इब्राहिम बिन अब्दुल्लाह अबज़वल साहिब का है जो जमाल अबज़वल साहिब के पिता हैं। यह 10 मार्च 2017 ई को 81 साल की उम्र में उनकी मृत्यु हुई। इन्ना लिल्लाह वा इन्ना इलैहि राजेऊन। उन्होंने 2000 ई में बैअत की थी उनकी पत्नी ने उन से पहले बैअत की थी और उनकी पत्नी ने ही उन्हें बैअत के लिए तैयार किया था। अक्सर एम.टी.ऐ देखते रहते थे। नमाज़ो के पाबन्द और कुरआन से विशेष प्रेम रखने वाले थे। सभी घर वालों से बहुत स्नेह करते बहुत सभ्य थे। औलाद के प्रशिक्षण में कभी सख्ती नहीं की। अपने परिवार को हमेशा एकजुट रखा। उदारता और रिशतेदारों में बहुत महत्त्वपूर्ण थे। वित्तीय लिहाज से कमज़ोर भाइयों को अच्छे दिनों में अपने व्यापार में भागीदार करके उनकी वित्तीय स्थिति बेहतर करने की कोशिश करते हैं। आतिथ्य उनकी विशेष विशेषता थी। जमाअत के मेहमानों के आने पर बड़े ख़ुश होते थे। जवानी से ही ईमानदारी में प्रसिद्ध थे यहां तक कि जिस व्यक्ति के पास काम करते थे वह अपना सारा सामान व्यापार और माल उनके हवाले कर देता था जिस पर उनके साथी व्यापारी हैरान हो जाते थे। अंतिम उम्र में बीमारी की हालत में लगातार नमाज़ के बारे में पूछते रहे। अल्लाह तआला मरहूम के स्तर ऊंचा करे और उनके परिजनों को भी धैर्य और साहस प्रदान करे और ख़िलाफत और जमाअत से जोड़े रखे।

☆ ☆ ☆

# पर्दे का महत्त्व

**सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला अपने ख़ुत्बा जुम्अः 13 जनवरी 2017 ई में फरमाते हैं।**

"पहली बात तो हमें हमेशा याद रखना चाहिए कि अगर हम ने धर्म पर कायम रहना है तो फिर हमें धार्मिक शिक्षाओं का पालन करना होगा। अगर हम ने यह घोषणा करनी है कि हम मुसलमान हैं और धर्म पर कायम हैं तो प्रतिबंध भी आवश्यक है। अल्लाह तआला और उसके रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की बात पर, आज्ञाओं का पालन करना भी आवश्यक है।

इसलिए लज्जा वाला लिबास और पर्दा हमारे ईमान को बचाने के लिए आवश्यक है।.......एक अहमदी बच्ची जिस ने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को माना है एक अहमदी व्यक्ति ने पुरुष ने स्त्री ने माना है वह धर्म को दुनिया में प्राथमिकता देने का वादा दिया है और यह प्राथमिकता देना तभी होगा जब धर्म की शिक्षा के अनुसार कार्य करेंगे। यह भी हमारा सौभाग्य है कि हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने हमें हर बात खोल खोलकर बयान फ़रमा दी है। इसलिए इस बे पर्दगी और बेहयाई के बारे में एक जगह का वर्णन करते हुए फरमाते हैं कि

"यूरोप की तरह बे पर्दगी पर भी लोग ज़ोर दे रहे हैं लेकिन यह कदापि उचित नहीं। यही महिलाओं की स्वतंत्रता दुराचार तथा अनाचार की जड़ है। जिन देशों ने इस प्रकार की स्वतंत्रता को उचित रखा है ज़रा उनकी नैतिक हालत का अनुमान करो। अगर उसकी स्वतंत्रता और बे पर्दगी से उनकी शुद्धता और पवित्रता बढ़ गई है तो हम मान लेंगे कि हम ग़लत हैं लेकिन यह बात बहुत साफ है कि जब आदमी और औरत जवान हों और स्वतंत्रता और बे पर्दगी भी हो तो उनके संबंध कितने ख़तरनाक होंगे।

(मल्फ़ूज़ात भाग 7 पृष्ठ 134-135 प्रकाशन 1985 ई यू. के)

आजकल समाज में जो बुराइयां हमें नज़र आ रही हैं यह हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के एक एक शब्द की पुष्टि करती हैं। परन्तु हर अहमदी लड़की लड़के और पुरुष और महिला को अपनी लज्जा की गुणवत्ता को ऊंचा करते हुए समाज के गंद से बचने की कोशिश करनी चाहिए न कि यह प्रश्न या इस बात पर हीन भावना का ख्याल कि पर्दा क्यों आवश्यक है?

अत: दुआ है कि अल्लाह तआला हमें पर्दा का महत्व समझने की तौफीक प्रदान फरमाए। आमीन।

(नाज़िर इस्लाहो इर्शाद मर्कज़िया कादियान)

☆ ☆ ☆

# ज़ैली तंज़ीमों के सालाना इज्तिमा 2017 ई की तारीखों की घोषणा

सारे भारत के ख़ुद्दाम तथा अत्फाल के लिए एलान किया जाता है कि

सय्यदना हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रेहिल अज़ीज़ ने कादियान दारुल अमान में सालाना इज्तिमा मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया तथा मजलिस अत्फालुल अहमदिया भारत 2017 ई के आयोजन के लिए दिनांक 13-14-15 अक्तूबर 2017 ई(शुक्रवार, शनिवार, रविवार) की मंजूरी प्रदान की है। समस्त ज़िला, क्षेत्रीय स्थानीय कायदीन को विशेष रूप से कहा जाता है कि सालाना इज्तिमा में होने वाले प्रोग्राम के अनुसार स्थानीय, ज़िला तथा क्षेत्रीय इज्तिमा आयोजित करें और अधिक से अधिक ख़ुद्दाम तथा अत्फाल को इन में शामिल करने की कोशिश करें।

इस के अनुसार ख़ुद्दाम भरपूर तय्यारी करें। सारे ख़ुद्दाम तथा अत्फाल से निवेदन है कि अभी से इज्तिमा की तैय्यारी शुरू कर दें। अल्लाह तआला आप के साथ हो

(सदर मजलिस ख़ुद्दामुल अहमदिया भारत)

☆ ☆

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
The Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP -45/2017-2019 Vol. 2 Thursday 20 April 2017 Issue No. 16

MANAGER : NAWAB AHMAD
Tel. : 91-1872-224757
Mobile : 91-94170-20616
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
ANNUAL SUBSCRIPTION : Rs. 300/-

# जामिया अहमदिया कादियान में प्रवेश

## नाज़िर तालीम कादियान

जामिया अहमदिया कादियान हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित वह पवित्र संस्था है जिस से अब तक सैंकड़ों उलमा और मुबल्लिग़ीन पास होकर संसार में इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं को फैला रहे हैं। सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला ने कई अवसरों पर अहमदी छात्रों को हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम द्वारा स्थापित इस पवित्र संस्थान में शिक्षा प्राप्त कर के सिलसिला की सेवा करने की तरफ ध्यान दिलाया है। अत: हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह के उपदेश की रोशनी में अधिक से अधिक वाकफीन नौ और दूसरे छात्र जामिया अहमदिया में प्रवेश लेकर धर्म की सेवा के लिए अपने आप को प्रस्तुत करें। अत: वे छात्र जो जामिया अहमदिया में प्रवेश लेने के इच्छुक हैं वे वक्फे नौ भारत (नज़ारत तालीम) विभाग से शीघ्र सम्पर्क करें और दाख़िला फार्म भर कर दफ्तर वक्फे नौ भारत (नज़ारत तालीम)में भिजवाऐं। हुज़ूर अनवर की मंज़ूरी से इस वर्ष से जामिया अहमदिया में प्रवेश अप्रैल से शुरू है। जामिया अहमदिया में प्रवेश प्रक्रिया के इच्छुक छात्र मैट्रिक और हाई सैकेण्डरी की परीक्षा समाप्त होते ही नतीजा आने से पहले अप्रैल, मई, जून तथा जुलाई में प्रवेश के लिए कादियान आकर प्रवेश परीक्षा दे सकते हैं। नतीजा आने पर Mark sheet जमा करवाई जा सकती है। प्रवेश के लिए नीचे लिखी शर्तें हैं।

1. मैट्रिक पास छात्र की आयु 17 साल हाई सैकेण्डरी पास छात्र की आयु 19 साल हो। आयु की सीमा में हाफिज़ों के लिए छूट दी सकती है।

2. जामिया अहमदिया में प्रवेश के लिए नेशनल कैरियर पलानिंग कमेटी वक्फे नौ छात्रों का इन्ट्रवियू तथा लिखित टेस्ट लेगी। लिखित टेस्ट में कुरआन मजीद, इस्लाम अहमदियत,धार्मिक ज्ञान उर्दू अंग्रेज़ी और जनरल नालेज के बारे में प्रशन पूछे जाएंगे।

3. लिखित और इन्ट्रवियू में पास होने वाले छात्रों का नूर हस्पताल कादियान में मेडिकल टेस्ट होगा। लिखित टेस्ट, इन्ट्रवियू तथा मेडकिल टेस्ट में पास होने वाले छात्रों को सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला की मंज़ूरी से जामिया अहमदिया में प्रवेश दिया जाएगा।

4. ग्रेजुएशन पास छात्रों को जामिया अहमदिया के प्रवेश में प्राथमिकता दी जाएगी।

ज़िला के अमीर, अमीर जमाअत, सदर सहिबान, मुबल्लिग़ों तथा मुअल्लिमों से निवेदन है कि होशियार और योग्य सिलसिला की सेवा की भावना रखने वाले और नेकी का रुझान रखने वाले छात्रों को चुन कर उन्हें जामिया अहमदिया में प्रवेश के लिए तैय्यारी करवांए और शीघ्र ऐसे छात्रों के प्रवेश फार्म भर कर दफतर वक्फे नौ भारत में भिजवाएं।

प्रवेश फार्म ई मेल के द्वारा मंगवाने के लिए एडरस:

**qdnwaqfenau@ gamail. com**

INCHARGE WAQF-E- NAU DEPARTMENT
OFFICE WAQF-E-NAU INDIA (NAZARAT TALEEM)
M. T. A BUILDING, CIVIL LINE ROAD
DIST, GURDASPUR, PUNJAB, (INDIA) PIN 143516
CONTACT: 01872-500975,9988991775

☆ ☆ ☆
☆ ☆

पृष्ठ 2 का शेष अहमदी सभी सम्मिलित थे, हुज़ूर को इस मुक़द्दमे में सज़ा दिलाने का पूरा-पूरा यत्न कर रहे थे परन्तु इन सारे हालात को देखने के बावजूद हुज़ूर अलैहिस्सलाम सत्य पर ड़टे रहे तथा झूठा बयान देने के लिए किसी हालत में भी तैयार न हुए और फिर अल्लाह तआला ने सत्य की बरकत से ही आपको इस मुक़द्दमे से इ़ज्ज़त के साथ बरीयत प्रदान की।

### तालीमुल इस्लाम स्कूल की नींव

1898 ई. के आरम्भ में हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने मदरसा तालीमुल इस्लाम के नाम से एक स्कूल आरम्भ किया। इस स्कूल के पहले हैड मास्टर हज़रत शेख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहो अन्हो नियुक्त हुए। इस स्कूल का उद्देश्य हुज़ूर ने यह बयान फ़र्माया ताकि अहमदी बच्चे सांसारिक शिक्षा के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा भी प्राप्त करें तथा बड़े हो कर सच्चे मुसलमान तथा सच्चे अहमदी बनें और इस्लाम के सेवक बनें।

### अख़बार अलहक़म तथा बदर का प्रारम्भ

जमाअत अहमदिया का सबसे प्रथम अख़बार अलहकम 1897 ई. में आरम्भ हुआ। इसके मालिक तथा संपादक हज़रत शेख़ याक़ूब अली साहिब इरफ़ानी रज़ियल्लाहो अन्हो थे। पहले यह अख़बार अमृतसर से निकलता रहा परन्तु अगले ही वर्ष 1898 ई. में यह अमृतसर से क़ादियान स्थानांतिर हो गया। इसके बाद 1902 ई. में एक दूसरा अख़बार बदर आरम्भ हुआ। इसके संपादक हज़रत मुफ्ती मुहम्मद सादिक़ साहिब रज़ियल्लाहो अन्हो थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इल्हाम, हुज़ूर की तक़रीरों (भाषणों) तथा आदेशों और सिलसिला अहमदिया के प्रारम्भिक इतिहास की मुख्य घटनाओं को सुरक्षित करने में इन दोनों अख़बारों ने विशेष भाग लिया ।

### बीस हज़ार रुपये का इनामी चैलेंज

जनवरी 1898 ई. में हुज़ूर ने एक पुस्तक ''किताबुल बरिय्या:" के नाम से प्रकाशित की। इसमें हुज़ूर ने अन्य बातों के अतिरिक्त बीस हज़ार रु का एक इनामी चैलेंज भी प्रकाशित किया। हुज़ूर ने लिखा कि यदि कोई व्यक्ति रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की कोई ऐसी हदीस प्रस्तुत करें जिस में यह लिखा हुआ हो कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अपने इसी शरीर के साथ आसमान में जीवित चले गए थे। तथा फिर किसी समय में वह धरती पर लौट कर आएँगे तो ऐसे व्यक्ति को बीस हज़ार रुपये इनाम दिया जाएगा हुज़ूर अलैहिस्सलाम के इस चैलेंज पर 109 वर्ष बीत चुके हैं परन्तु जो लोग हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवित आकाश पर होने का सिद्धान्त मानते हैं उन में से किसी को भी आज तक इस चैलेंज को क़बूल करने का साहस नहीं हुआ। इस प्रकार यह स्पष्ट हो गया कि मसीह के जीवित होने का सिद्धान्त, इस्लाम तथा रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षा के बिल्कुल विरुद्ध है।

### ताऊन (प्लेग) फैलने की भविष्यवाणी

फ़रवरी 1898 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने एक स्वप्न में देखा कि :-

''ख़ुदा तआला के फ़रिश्ते पंजाब के विभिन्न स्थानों में काले रंग के पौधे लगा रहे हैं तथा वह वृक्ष बड़े ही बुरी आकृति के काले रंग तथा भयानक तथा छोटे कद के हैं। मैं ने लगाने वालों से पूछा कि यह कैसे वृक्ष हैं तो उन्होंने उत्तर दिया कि यह प्लेग के वृक्ष हैं जो शीघ्र ही देश में फैलने वाली है।"

(अय्यमुस्सुलह पृष्ठ : 121)

हुज़ूर की इस भविष्यवाणी के अनुसार ठीक अगले जाड़े की ऋतु में पंजाब के विभिन्न भागों में प्लेग का रोग फूट पड़ा तथा फिर कई वर्षों तक इसने ऐसी तबाही मचाई कि क़यामत का नमूना सामने आ गया। हज़ारों गाँव, कस्बे तथा नगर उजाड़ हो गए। हुज़ूर की यह भविष्यवाणी पूरी होने पर बहुत लोगों ने हुज़ूर की बैअत की तथा वह जमाअत अहमदिया में सम्मिलित हो गए।

(शेष.....)

☆ ☆ ☆
☆ ☆

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad